Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2022 3(2), 1195–1199

MORAL PROBLEMS DEPICTED IN KRISHNA SOBTI'S NOVELS

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नैतिक समस्याएँ

Dr. Khuraijam Uma Devi [1]

[1] Assistant Professor, Hindi Department G.P. Women's College, Imphal Dhanmanjuri University, Manipur, India

ABSTRACT

English: On the Indian literature scene, it is known that the moral problems depicted in the novels of the famous Hindi story writer Krishna Sobtiji. Krishnaji has reviewed all those traditions and loyalties in her novels. In her novels, the writer has mostly presented the depiction of middle class families and their moral conditions. For example, respecting elders, maintaining dignity, serving others, trying to protect one's chastity with all her might, etc. The main problem of this novel is that of Pasho. It is the story of 'Pasho', who is bound by traditions and customs, slipping and going astray. Once 'Pasho' got separated from the branch, she had to pass through many thorny paths and trails. 'Daar se bichhudi' means a woman who is free from the clutches of social taboos and family rules and regulations. But who listens to the cry of a helpless woman in a male-dominated society. In this novel, Sheikhji has been depicted as a human moral value. In the novel 'Mitro Marjani', the writer has presented a woman who, despite being the wife of 'Mitro', Sardar Lal, is troubled by sexual power and shamelessness and is immersed in luxury, love, and is busy teasing and taunting others. Although, the writer has shown her as an open-hearted woman. 'Mitro', on one hand, is a fierce rebel and on the other hand has a deep faith in wisdom and human values. 'Mitro', who courageously rejects the allure of ideals and the fear of society, has been presented as a woman who challenges morality when she is not sexually satisfied by her husband. In the novel 'Yaaron Ke Yaar', Krishnaji has presented bureaucracy, corruption, degradation through the reality of urban and office life and at the same time a working woman typist like Miss Tamasha who becomes a call girl to earn more money. In the novel 'Tin Pahad', the writer has presented the life of such a woman through Jaya who is rejected even after being engaged, and is deprived of the rights she gets as a daughter and daughter-in-law. This Tin Pahad is a symbol of three shocks. First, Shri rejecting his fiancé after marrying 'Edna'; second, marrying Jaya Shri first as a daughter and later as a daughter-in-law; and third, the desire to get connected to Tapan has been depicted in this novel. In the novel 'Sunflowers of Darkness', the writer has also thrown light on the problems of moral values. In this, the mental state of 'Ratti' who was raped in childhood has been presented. In this novel, through Ratti who was raped in childhood, a woman has been portrayed who cannot forget the bitter memories even if she wants to, who loves solitude, is strong and fearless and who has gone through the failures of life and is the story of growing, desiring and achieving the sunflower of future hopes. In this novel, all moral values are proved false for Ratti. The writer has portrayed moral values and traditions in her novels.

Hindi: भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर हिन्दी की सुविख्यात कथाकार कृष्णा सोबतीजी के उपन्यासों में चित्रित नैतिक समस्याओं पर प्रकाश डालने पर ज्ञात होता है। कृष्णाजी ने अपने उपन्यासों में उन तमाम परम्पराओं और निष्ठाओं की समीक्षा की है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में ज्यादातर मध्यवर्गीय परिवार, अपनी नैतिक अवस्थाओं का चित्रण प्रस्तुत किया है। जैसे, बड़ों का सम्मान करना, लाज लिहाज रखना, सेवा सत्कार करना, अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपनी शक्ति भर कोशिश करना इत्यादि। यह उपन्यास की मुख्य समस्या पाशो की है। इसमें परम्पराओं और रूढ़ियों से जकड़ी 'पाशो' के फिसल जाने पर उसके भटकने की कहानी है। 'पाशो' एक बार डार से बिछुड़ गई तो बहुत सारे कँटीले रास्तें, पगडंडियों से गुजरना पड़ा था। 'डार से बिछुड़ी अर्थात्सामाजिक वर्जनाओं और परिवार के कायदे कानूनों की गिरफ्त से छुट्टी नारी। पर पुरुष प्रधान समाज में एक अबला नारी की पुकार कौन सुनता है। इस उपन्यास में मानवीय नैतिक मूल्य के रूप में शेखजी को दर्शाया गया है। 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में लेखिका ने एक ऐसी नारी को प्रस्तुत किया है जो 'मित्रो', सरदारीलाल की पत्नी होते हुए भी वह कामशक्ति और निर्लज्जता से त्रस्त है और विलास, राग-रंग में डूबी, चिढ़ने और चिढ़ाने में व्यस्त है। वैसे तो लेखिका ने उसे खुले दिल की महिला के रूप में दिखाया हैं। 'मित्रो', एक ओर प्रचंड विद्रोही है तो दूसरी ओर विवेक और मानवीय मूल्यों में अगाध आस्था रखती है। आदर्श का मोह और समाज के भय को हिम्मत से ठुकराने वाली 'मित्रो' अपने पति से यौन तुष्टि न होने पर नैतिकताको चुन्नौति देने वाली नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। 'यारों के यार' उपन्यास में भी कृष्णाजी ने शहरी और दफ्तरी जीवन के यथार्थ के जरिए नौकरशाही, भ्रष्टाचार, पतन और साथ-साथ नौकरी पेशा मिस तमाशा जैसी टाइपिस्ट नारी को प्रस्तुत किया है जो अधिक से अधिक धनार्जन हेतु कॉल गर्ल बन जाती है। 'तिन पहाड़' उपन्यास में लेखिका ने जया के जरिए एक ऐसी नारी का जीवन प्रस्तुत किया है जो मंगेतर होने पर भी ठुकराया जाता है,

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.5153

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

पुत्री तथा पुत्रवधु के रूप में प्राप्त अधिकार से वंचित कराया जाता है। यह तिन पहाड़ तीन सदमों के प्रतीक है। पहला 'एडना' से विवाह कर श्री द्वारा मंगेतर को ठुकरा दिया जाना दूसरा-पहले पुत्री तथा बाद में पुत्रवधु के रूप में जया श्री के साथ विवाह और तीसरा-तपन से जुड़ने की चाह को इस उपन्यास में दर्शाया गया है। 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास में भी लेखिका ने नैतिक मूल्य समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें बचपन में बलात्कारित 'रत्ती' की मानसिक स्थिति को लेकर प्रस्तुत किया गया है। इसमें बचपन में बलात्कारित रत्ती के जरिए ऐसी नारी को चित्रित किया है जो कटु स्मृति को चाहकर भी भूल नहीं पाती, जो एकान्त प्रिय, मजबूत और निडर भी है और जिसे जीवन की असफलताओं से गुजर कर भविष्य की आशाओं की सूरजमुखी उगाने, चाहने और पाने की कहानी है। इस उपन्यास में रत्ती के लिए सभी नैतिक मूल्य झूठे सिद्ध होते हैं। लेखिका ने अपने उपन्यासों में नैतिक मूल्य और रूढ़ि परम्पराओं को चित्रित किया है।

Keywords: Moral, Traditions, Social Taboos, Grip, Sexual Power, Shamelessness, Bureaucratic Corruption, Raped, Mental, Memory Etc, नैतिक, परम्परा, रूढ़ियों, सामाजिक वर्जनाओं, गिरफ्त, कामशक्ति, निर्लज्जता, नौकरशाही भ्रष्टाचार, बलात्कारित, मानसिक, स्मृति इत्यादि

1. प्रस्तावना

'नैतिक' का अर्थ है नीति संबंधी भाव एवं कार्य। दूसरे शब्द में उसे नैतिकता कहते हैं। इस तरह नैतिकता मनुष्य जीवन के कर्त्तव्य का संचालन करती है और वह सत्कर्म की तरफ हमें प्रेरित कर सही रास्ता देती है। मार्ग भटकने से हमें बचाती है। यही एक मात्र ऐसा साधन है जो विसंगतियों और अंतर्विरोदों के बावजूद गतिशीलता प्रदान करती है और नई-नई चुनौती को सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। जीवन में असंतोष, छटपटाहट, निराश, संघर्ष कई तरह का वातावरण छाया रहता है। ऐसे वातावरण में निश्चय ही नैतिकता अनुकूल स्थिति पैदा करती है। बदलते परिवेश के अनुकूल यथार्थ की पकड़ ज्यादा मजबूत हुई और यथार्थ की परिभाषा भी बदली कि किसी घटना का यथावत चित्रण ही यथार्थ नहीं कहलाता। जीवन से सीधा साक्षात्करने की प्रवृत्ति और ज्यादा मजबूत होती है। जीवन से पलायन की प्रवृत्ति और अप्रिय प्रवृत्तियों पर आँखें मूँदे रहने की प्रवृत्ति से छुट्टी मिल जाती है। इस तरह की प्रवृत्ति आज के कथा साहित्य में दिखाई देता है। कथा साहित्य की विकास यात्रा में धीरे-धीरे नये आयाम जुड़ने लगे और उपदेशात्मकता का आग्रह कम होता गया। यह आग्रह कम होने के साथ-साथ अखड़ने लगा। उपन्यास भी ऐसे लिखे जाने लगे कि किसी नैतिक निष्कर्ष का दृष्टांत मात्रा बनकर न रह जाए। इसी दृष्टि से नैतिकता की परिकल्पना पीछे छुट गई। वैज्ञानिक यथार्थवाद में जीवन की स्वस्थ्य और नैतिक धारणा में निष्ठा होती है। लेकिन यही स्वस्थ और नैतिक धारणा गर्भित नहीं होती उसकी व्याप्ति वस्तु में भी होती है। वस्तु दृष्टि का नैतिक होना यथार्थ दृष्टि की सौन्दर्य दशा का परिचायक है।

कृष्ण सोबती जी ने अपने उपन्यासों में उन तमाम परम्पराओं और निष्ठाओं की समीक्षा की है। मध्यवर्गीय परिवार अपनी नैतिक परम्पराओं के प्रति बेहद चिंतित होते हैं। नैतिक स्वच्छन्दता के कारण नैतिक मानदण्ड परिवर्तित होने लगे हैं। व्यक्ति थोपी गई नैतिकता स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं है। नैतिकता ईश्वर प्रदत्त न होकर मानव समाज द्वारा निर्मित है।

डार से बिछुड़ी उपन्यास में कृष्णा सोबती ने समाज की नैतिक अवस्थाओं का चित्रण प्रस्तुत किया है। जैसे बड़ों का सम्मान करना, लाज लिहाजल रखना, सेवा-सत्कार करना, अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपनी शक्ति भर कोशिश करना इत्यादि। परन्तु पुरुष प्रधान समाज जिसमें अंधविश्वास, रूढ़िवादिता का बोलबाला और शिक्षा का अभाव हो, एक अबला नारी की पुकार कौन सुनता है। तथापि पाशो का भाई, शेख जी का लड़का उसे अपनी सगी बहन से कम नहीं मानता। उसी तरह पाशो भी उसे अपना सगा भाई जैसा ही प्यार करती है। वीर को आत्मगौरव है कि वह खत्रानी का पुत्र है – ''बहना, शेखों का लड़का हूँ तो क्या, माँ तो खत्राणी है!''

प्रस्तुत उपन्यास में मानवीय नैतिक मूल्य शेखजी, शेख के लड़के, पाशो के नये वीर में तो है परन्तु नानी, मामा, मामी धार्मिक कट्टरता के कारण मानवीय मूल्य को समझ नहीं पाते हैं।

पुन: क्षत्रिय अपने वर्णाश्रम धर्म का निर्वाह करने के लिए अपना सबकुछ अर्पण कर देते हैं। मुँह बोली बहन पाशो का नया वीर अपने पूर्वजों की तरह फिरंगियों का सामना करते-करते शहीद हो गया। उसने क्षत्रीय धर्म को निभाया। वीर रणभूमि में जाने से पहले वह पाशो से कहता है –

आज तो चला बहना। लौट आया तो तुम्हें सासरे पहुँचाने जाऊँगा। बड़ी माँ, बहन की बिदाई के कपड़े-लीड़े बना रखना।

परन्तु कृष्णा सोबती जी ने उपन्यास के चरम आदर्श को तो पाशो की वाणी में प्रारंभ में ही उजागर कर दिया है। अच्छा और बुरा, नेकी और बदनामी के झूले में झूलती उसने अन्त में जैसे सबको क्षमा कर दिया हो और आप दु:ख सहकर सबकी मंगल कामना करती है –

''जियें! जागें! सब जियें जागें!

अच्छे, बुरे, अपने, पराये, जो भी मेरे कुछ लगते थे सब जियें! ... मालिक के किये जब भरी रही मेरी झोली, हरी रही मेरी झोली, तो क्यों न लोक-जहान फले-फूले! क्यों न अपने-पराये जियें जागें! हँसे-खेलें उनकी भरी-पूरी गृहस्थियाँ, जिन्होंने बाँहे बढ़ा मुझ कर्मजली को अपनी डार से मिला लिया! सब जियें! सब जागें!''

'मित्रो मरजानी' की मित्रो सरदारीलाल की पत्नी है। वह कामशक्ति और निर्लज्जता से त्रस्त है और विलास, राग-रंग में डूबी चिढ़ने और चिढ़ाने में व्यस्त है। वैसे तो लेखिका ने उसे खुले दिल की महिला के रूप में दिखाया है परन्तु यहाँ पुरानी मान्यताओं के नये रूप की झाँकी प्रस्तुत की गई है। मित्रो एक मस्त युवती, सुन्दर और अतृप्त स्त्री है। पति की उदासीनता के कारण वह शारीरिक रूप में तृप्त नहीं है। वह घूँघट में सिमटकर मूक रहनेवाली नहीं है। वह अपनी व्यथा दिल खोलकर जेठानी से कहती हैं –

''सच कहना, जिठानी सुहागवन्ती, क्या ऐसी छातियाँ किसी और की भी हैं?'' इस बात का घोतक है कि उसे अपने सौंदर्य का पूरा एहसास है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका यह दिखाना चाहती है कि नैतिक अनैतिक क्या है? क्या फूलाँवन्ती जो अपने पति को माता-पिता और परिवार से अलग कर देती है। सांझे व्यापार का पैसा पति से निकलवाकर गहने बनवाती है, क्या यह नैतिक आचरणवाली है? इसके विपरीत कर्ज उतारने के लिए पति को समय पर पैसा देनेवाली मित्रों सुव्यवस्थित ढंग से चाले चलकर अपना स्वार्थ सिद्ध करती है, क्या इसलिए वह अनैतिक आचरणवाली है? मित्रो का दिल नेक है। गौर से विचार करने पर फूनाँवन्ती अनैतिक चरित्रवाली और मित्रो चरित्रवान महिला है परन्तु हमारा समाज इसके विपरीत फूलाँवन्ती को नैतिक मर्यादा के अनुकूल चलने वाली और मित्रो को नैतिक मर्यादा के विपरीत चलने वाली मानती है। फूलाँवन्ती नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती लेकिन उसका समूचा आचरण परिवार समाज एवं राष्ट्र के लिए घातक है। वहीं मित्रो स्त्री स्वाधीनता की माँग को दर्शाती है।

'मित्रो मरजानी' की मित्रो रूढ़ परम्परागत नैतिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह करती है। मित्रो का विरोध परम्परा के विरुद्ध है। उसका प्रत्यावर्तन अपनी अस्मिता का उदघोष है। मित्रो ने सदियों पुरानी जमीन को तोड़ा है। मित्रो नैतिकता के बंधनों को त्यागकर स्पष्टता से कहती है –

''जिठानी, तुम्हारे देवर सा बागलोल कोई और दूजा न होगा। न दु:ख-सुख, न प्रीति-प्यार, न जलन-प्यास ... बस आए दिन धौल-धप्पा ... लानत-मलामत!''

वह अन्याय के विरोध के साथ नैतिक सीमाओं का भी उल्लंघन करती है। जैसे-ऐसा गजब करना बोबो, मैं हाथ से अपना गबरू गवाँ बैठूँगी।

'सूरजमुखी अँधेरे के' की रत्ती के लिए तो सभी नैतिक मूल्य झूठे सिद्ध होते हैं। नई नैतिकता अब मनुष्य को टोकती नहीं, रोकती नहीं है अपितु उसके कार्य का समर्थन करती है। पुरानी नैतिकता कई बार व्यक्ति का जीना मुश्किल कर देती है। डॉ. – पारूकान्त देसाई का कहना है – ''भौतिकवादी चिंतन प्रणाली ने जीवन मूल्यों में अभूत पूर्व परिवर्तन उपस्थित किया है।''

प्रत्येक समाज में नैतिक मूल्यों की विशिष्ट परम्परा रही है। उच्चता, श्लील, अश्लील, पाप, पुण्यादि के अपने मानदण्ड रहे हैं। पानेरी का कहना है – ''आचरण की पवित्रता के स्थान पर दैहिक सौन्दर्य को अधिक महत्त्व मिल रहा है। वैवाहिक जीवन में तलाक को स्वीकृति मिल चुकी है। अंतर्जातीय और अन्तराष्ट्रीय विवाहों को प्रोत्साहन मिलने के कारण सजातीय विवाहों के नैतिक मूल्य विश्रृंखलित हो चुके हैं।''

तिन पहाड़ के 'श्री' और 'एडना' का विवाह इसी धरातल का है।

'सूरजमुखी अँधेरे के' की रत्ती गैर पुरुष के साथ सम्बन्ध स्थापित करती है। उद्धरण दृष्टव्य है–

''रत्ती ओठों की मोहिनी सी देखती रही, फिर असद का हाथ छु लिया- जानते हैं असद भाई, कभी नए कपड़े पहनने से कैसा लगता है?

असद ने सुना नहीं। देखा भर। और पास आ चूम लिया। रत्ती मग्न सी हँस दी और असद की और बाँह फैला दीं – ''असद भाई, बिल्कुल वैसा ही ... नए लिबास जैसा!''

किसी भी जाति या समाज के लिए नैतिक मूल्य अत्यन्त आवश्यक है। समाज अच्छा है या बुरा, वहाँ के सदस्यों के व्यवहार पर आधारित होता है। अगर व्यवहार सदगुणों जैसे सत्य, अहिंसा, प्रेम, अस्तेय, शरीर श्रम, आपसी भाईचारे, सद्भावना से पूर्ण होता है तो निश्चय ही वह उत्तम समाज है। इसके विपरीत वहाँ के लोगों में चोरी, हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि दुर्गुण हो तो अवश्य ही वह समाज बुरा है। नैतिक आचरण जैसे व्यक्ति के लिए आवश्यक है उसी तरह समाज के लिए भी। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में लेखिका ने अंचल के लोगों की नैतिकता को सामने रखने का सफल प्रयास किया है।

यहाँ के अधिकांश पुरुष-स्त्रियाँ भावावेग में आकर कुछ उत्तेजक, रोमांचक और आल्हादक काम कर देते हैं जो नैतिक सिद्धांतों के विरुद्ध है। जैसे चाचाजाद भाई का खून, सम्पत्ति हड़पने के लिए शाहजाद खाँ का कत्ल। इसी प्रकार चोरी और डाका की घटनाएँ घटती हैं। यह अंचल की विशेषता है कि लोग जेल-जाना, डाका-कत्ल करना, जुर्म नहीं, मर्दानगी मानते हैं।

कचहरियों के न्याय के प्रति जनता में विश्वास नहीं है बल्कि आक्रोश है। काशीशाह बड़े भार्स से कहता है –

''भ्राजी, कचहरियों की कानूनी और मुहर्रिरी झूठ-झँखाड़ ही समझो। वादी कुछ कहे, गवाह कुछ हादसा कुछ, बयान कुछ। जुर्म किसका और सजा किसको। पुख्ता चीज तो एक ही अदालत-में-अदालत और अदालत की कुर्सी।''

कृष्णा सोबती जी के 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में दो प्रमुख पात्र हैं – शाहजी और उनका भाई काशीशाह। शाहनी व्यवहारिक और दुनियादारी में निपुण हैं, काशीशाह उतने ही वैरागी, निर्लोभी और सरल। काशीशाह को किसान का शोषण अच्छा नहीं लगता। वह अपने भाई से उनका कर्ज आधा माफ कर देने को कहते हैं – ''भ्राजी, दिन में एक बार सुक्खमनी का पाठ जरूर कर लिया करें। इस छन-भंगुर जगत में नाम ही कमाई। माया दमड़े नहीं!''

इस प्रकार गाँव में जट्ट किसानों का शोषण अवश्य होता है। लोग मौज-मस्ती मनाते हैं। परन्तु यह उनका लक्ष्य नहीं है। अच्छे-बुरे की उन्हें पहचान है। वे सुख चाहते हैं परन्तु उतने स्वार्थी और कठोर नहीं। उनके अन्दर में मातृत्व और परोपकार की भावना भी है। अत: उनका नैतिक विचार अन्य भारतीय प्रांतों जैसा ही है।

कृष्ण सोबती जी के उपन्यासों में शराब और सेक्स में डूबती नारी का चित्रण भी पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होता है। हर दृष्टि से स्त्री नैतिकता का विरोध करते दिखाई देती है। इसका चित्रण 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास में दिखाई देता है। उपन्यास का मूलस्वर काम और अपनी भूख मिटाना चाहती है दूसरी ओर वह ठीक समय आने पर अपने चारों ओर कँटीली तारों की सीमा लगा देती है ताकि कोई भी अन्दर पहँच न पाए। रत्ती कभी केशव के साथ तो कभी दिवा के साथ शराब पीती रहती है। स्वयं रत्ती के शब्दों में –

''आज मैं अपने घूँट लम्बे, बहुत लंबे करना चाहती हूँ। इतना कि लेते-लेते सुबह हो जाए।''

'मित्रो मरजानी' की मित्रो भी यौवन की उद्गम आवेग में न सास की सुनती है और जेठ, जिठानी की लाज रखती है। वह पराए पुरुष से हँसने-बोलने में उसे लज्जा नहीं आती। मित्रो अपने पति सरदारीलाल को मोम के गुड्डे से अधिक नहीं समझती। वह कहती है – ''सच्ची की पुनु। याद रख खांड का बतासा नून का डला घुलकर ही रहेगा।''

'तिन पहाड़' उपन्यास में कृष्णा सोबती जी ने समाज के समक्ष, एक प्रश्न खड़ा कर दिया है, नैतिकता का; 'जया' और 'श्री' के बीच तथा फिर 'एडना' और 'श्री' के बीच प्रेम का कथा सबसे महत्त्वपूर्ण बात है; जया का श्री के प्रेम से वंचित होना और फिर तिस्टा नदी में कूदकर सदा-सदा के लिए सबको छोड़कर विलीन हो जाना। 'जया' की मँगनी 'श्री' के साथ हो गई है। जया, 'श्री' से प्यार करती है। 'श्री' भी जया के सौंदर्य से आकर्षित है। 'श्री' माँ से भी वादा करता है कि वह 'जया' से विवाह करेगा, कहीं अन्यत्र, अन्य से सम्बन्ध न जोड़ेगा। परन्तु 'एडना' से परिचय होने पर उसने, उससे प्रेम और प्रेम-विवाह कर लिया। यही श्री की माँ और जया के लिए मार्मिक चोट का कारण बन गया। इधर प्रेम से वंचित जया का कलकत्ता से दार्जलिंग आना, 'तिन पहाड़' स्टेशन और आस-पड़ोस बहती 'तिस्ता' की धारा तथा उसका तपन से 'मुलाकात' और फिर दोनों की आत्मीयता और स्नेह का प्रेम का रूप ले लेना, इतनी सारी घटनाएँ उपन्यास को पाठकों के लिए जिज्ञासा से परिपूर्ण कर देती हैं। अब प्रश्न उठता ह कि 'श्री' का 'एडना' से प्रेम करना क्या नैतिकता का उल्लंघन है? फिर तपन का जया से प्रेम करना तथा जया, तपन के साथ अपने को न बाँधकर तिस्ता में कूदकर आत्म हत्या कर लेती है; क्या यह नैतिक है? ये सारे प्रश्न समाज के समक्ष उठ खड़े होते हैं।

'श्री' का 'एडना' से प्रेम-विवाह को लेखिका जैसे आकस्मित कहना चाहती है परन्तु युवावस्था में एक पुरुष का एक सुन्दर, सुशील और चमक-दमकवाली तथा खुलकर बात करनेवाली स्त्री से प्यार हो जाना स्वाभाविक है। 'श्री' को एडना से घनिष्टता बढ़ाना, अनैतिक है; परन्तु प्यार करने के बाद प्रेम-विवाह करना नैतिक है।

उधर 'जया' को 'तपन' की घनिष्टता से प्रेम तो अवश्य ही उमड़ पड़ता है परन्तु वह उसे रोक लेती है। रस में भींगी जया ने गुमते हुए अपने से लगा सिर सहला दिया और जाने कैसे कण्ठ से बोली–

''याद जो सामने आ रहा रोकले उसे अनसुनी कर आगे जाना अच्छा नहीं।''

यहाँ जया का जो अतीत है यानी श्री की माँ श्री के साथ का अतीत वह उसे आगे जाने से यानी तपन से बँधने में रास्ता रोक लेता है। 'जया' की 'आत्महत्या' का कारण हैं – प्रथम 'एडना' से विवाह कर 'श्री' द्वारा मंगेतर जया को ठुकरा देना यानी जया को भावनात्मक आघात पहँचना। दूसरे, पहले पुत्री तथा बाद में पुत्रवधू के रूप में जया जिस माँ और घर पर अपना अधिकार समझती आई है, वही अब 'श्री' के एडना के साथ विवाहोपरान्त अपना न रहा, इस तरह की शंका यानी निराश्रित हो जाने का कष्ट। तीसरे तपन से जुड़ने की इच्छा और तपन-पतून का सम्बन्ध जानकर उनके बीच दरार बनने की भिझता अर्थात्निरर्थक रंगहीन जीवन जीने का कटुबोध। इस तरह जया जीवन से निराश हो गई है।

इतना तो स्पष्ट हो ही गया है। 'जया' आज के बदलते कसौटी पर खड़ी नहीं उतरती। वह भावुक है। उसका आत्म-हत्या का निर्णय बचपना है तथापि वह औसत महिला से विशिष्ट है। जया की आत्म-हत्या का समाचार सुनकर तपन, श्री, एडना तथा रौस चारों अने को दोषी समझते हैं। जया फिर सबके सामने एक प्रश्न छोड़ गई –

''जिसकी साड़ी का टुकड़ा-भर ही बच सका, वह इन सबकी क्या होती होगी ... क्या होती होती ...।''

'यारों के यार' उपन्यास में भी तमाशा और तमन्ना दोनों भी सेक्स में डूबी हुई हैं। जैसे – पखवारे के प्रोग्राम देख। अलग-अलग पूरो की फहरिस्त पढ़ी और माहिर मेज में टेलीफोन पर सब फिक्स कर दिया। सिर्फ दो छोकरियों ने नखरे दिखाए। भाटिया ने इश्क पेंचा ढीली की-प्यारे दोस्तों, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि भाटिया हार्ट-अटैक से नसिंग होम में नहीं पड़ा। हमेशा की तरह अपनी डयूटी पर तैनात हो और तुम दोनों की फन की कद्र करना जानता है। इम्पोरटेड मेंडस फार्म से लेकर गुसले सेहत तक का सब खचा अलावा फिस के।

इस तरह शराब और सेक्स इनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इन पात्रों में हमेशा सेक्स विषयक चेतना दृष्टिगोचर होती है। कृष्णजी के उपन्यासों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उन चार पुरुषार्थ में इसकी गणना की जाती है। किन्तु अन्य पुरुषार्थी की अपेक्षा काम को जीवन का लक्ष्य और 'काम' ही जीवन मानकर चलने वाली नारी समाज में निश्चय ही निन्दा का विषय बन जाती है। उनके उपन्यासों में ऐसी नारियों का चित्रण भी पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होता है। उनके कई नारी पात्र सेक्स में डूबे रहते हैं। मित्रो, रीमा, तमाशा, तमन्ना इसी कोटि के नारी पात्र है।

2. निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि बदलते परिवेश ने साहित्य को भी प्रभावित किया है। कथा साहित्य में उपदेशात्मक शैली का प्रयोग धीरे-धीरे होता गया। कथा-साहित्य की यह परिकल्पना है कि औपन्यासिक शैली ऐसी है जो किसी निष्कर्ष का दृष्टान्त मात्र बन कर रह जाए धीरे-धीरे धुमिल होती गई। ऐसा नहीं था कि कथा-साहित्य सोद्देश्यता अथवा नैतिक मूल्यों को त्यागने लगा था बल्कि सोद्देश्यता का उग्र रूप बराबर बना रहा, पर अब वह कथा में खप कर सामने आने लगा है। नैतिक उपदेश देने के साथ जीवन के सरलीकरण की प्रवृति, अपने को पूर्वाग्रह से मुक्त करने की प्रवत्ति बढ़ने लगी थी। इससे निश्चय ही उपन्यास साहित्य का विकास हुआ और उसमें अधिक कलात्मकता भी आने लगी। पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों में पायी जाने वाली विसंगतियाँ, बदलते परिवेश में पैदा होने वाली उलझनें, पात्रों के अन्तर्मन में उठने वाले तनाव, नये-नये दबाव और नयी-नयी समस्याएँ, कथानक उपन्यासों के लिए जुटाने लगे।

इसके फलस्वरूप हमारा सिद्धान्तों से थोड़ा हटकर जीवन के यथार्थ की ओर अधिक उन्मुख होने लगा था। यथार्थ की यह दृष्टि कृष्णा सोबती जी के उपन्यास में स्पष्ट रूप में दिखाई देती है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

डॉ. साधना अग्रवाल (1985), वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
डॉ. मोहनलाल कपूर (2005), प्रमुख हिन्दी उपन्यास एक विश्लेषण, नेहा प्रकाशन, दिल्ली।
निर्मला जैन (1992), साहित्य का समाज शास्त्रीय चिंतन हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
डॉ. उर्मिला (1978), स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ, अनुराग प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।
डॉ शहेनाज जाफर वासमेह (2009), कृष्ण सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ, अमन प्रकाशन, कानपुर।
डॉ. सुलोचना अंतरेडडी, (2005), कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन, अमन प्रकाशन, कानपुर।
डा. सुखदेव शुक्ल (1966), हिन्दी उपन्यास विकास और नैतिकता, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर।